B.A. PART → III, Paper – VII th [7 th].
Part – (A) **Industrial Psychology**. Prem Shankar Sinha
Page-① Role of Psychologist in Industry Assistant Professor
Deptt. of Psychology
[redacted]

Q. :→ उद्योगों एवं संगठनों में मनोवैज्ञानिकों की भूमिका का वर्णन. Discuss the role of Psychology or Psychologists in Industry or Organization?

Ans :– PSYCHOLOGY के आधुनिक परिभाषाओं में एक परिभाषा यह है कि मनोविज्ञान समायोजन का विज्ञान है। इस विज्ञान के अन्तर्गत इस बात का अध्ययन किया जाता है कि व्यक्ति भिन्न-भिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार समायोजन स्थापित करता है। दूसरे शब्दों में समायोजन स्थापित करने की कला या ज्ञान मनोविज्ञान के अध्ययन से प्राप्त होते हैं। मनोविज्ञान की यह परिभाषा इसकी उपयोगिता पर बल देती है। इस दृष्टिकोण से देखा जाय तो जीवन के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण उपयोगिता या भूमिका दृष्टिगोचर होती है। शिक्षा, उद्योग, न्यायालय, राजनीति आदि अनेक क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक अपनी भूमिका निभाते हैं और मनुष्य की व्यवहारिक समस्याओं के [समायोजन] या समाधान में सहायक होते हैं।

जहाँ तक उद्योग [Industry] अथवा संगठन का प्रश्न है इस क्षेत्र में भी मनोविज्ञान अथवा मनोवैज्ञानिक की अहम् भूमिका है। औद्योगिक संगठन में एक ओर उद्योगपति होते हैं और दूसरी ओर कर्मचारी होते हैं। इन दोनों के मध्य Manager, पर्यवेक्षक आदि पदाधिकारीगण होते हैं। उद्योग का लक्ष्य एक ओर उद्योगपति को लाभ पहुँचाना है। और दूसरी ओर कर्मचारी को लाभ पहुँचाना है। दूसरे शब्दों में कम-से कम लागत पर अधिक-से-अधिक मजदूरी प्राप्त करना कर्मचारी का लक्ष्य होता है। इस विरोधी प्रतीत होनेवाले लक्ष्यों को प्राप्त करने में मनोवैज्ञानिक बहुत हद तक सहायक होते हैं। मनोवैज्ञानिकों की भूमिकाओं अथवा मनोविज्ञान की उपयोगिताओं को निम्नांकित स्तम्भों में देखा जा सकता है।

(1) मनोविज्ञान की उपयोगिता, कर्मचारियों के चयन के रूप में देखी जा सकती है। कर्मचारी चयन का उद्देश्य सही कार्य (Right Job) के लिए सही व्यक्ति [Right Person] का चयन

Page - ②

करना होता है यह कार्य सही रूप में मनोविज्ञान की सहायता के बिना संभव नहीं है। मनोवैज्ञानिक भिन्न-भिन्न तरह के मनोवैज्ञानिक परीक्षणों यथा बुद्धि परीक्षण, अभिक्षमता परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण आदि का उपयोग करके सही व्यक्ति के चयन में सहायक होते हैं। इसके अतिरिक्त निरीक्षणों के आधार पर से संवेगात्मक स्थिरता, भाषा शैली, शारीरिक हावभाव अन्तर्मुखता, बहिर्मुखता आदि की जानकारी के द्वारा सही कार्य के लिए सही कर्मचारी का चयन संभव होता है।

② वैयक्तिक भिन्नता [Individual differences]:— मनोविज्ञान के अध्ययन से पहली बार उद्योगपति Manager आदि पदाधिकारियों को इस बात की जानकारी मिली कि कर्मचारियों में ~~व्यक्तित्व~~ वैयक्तिक भिन्नताएँ होती हैं, इसलिए उनसे सामान्य अपेक्षाएँ नहीं की जा सकती है। इस जानकारी से पदाधिकारियों तथा कर्मचारियों के बीच समायोजन में मदद मिली। आज भी पदाधिकारीगण मनोविज्ञान की इस उपलब्धि से लाभ उठाते हैं।

③ कार्य संतुष्टि [Job Satisfaction]:→ व्यवसाय अथवा कार्य संतुष्टि के क्षेत्र में भी मनोविज्ञान की महत्वपूर्ण भूमिका है। कर्मचारी अपने कार्य से क्यों असंतुष्ट हो जाते हैं इस असंतुष्टि के क्या प्रभाव होते हैं, इस असंतुष्टि को दूर करके कर्मचारियों में कार्य के प्रति संतुष्टि कैसे उत्पन्न की जा सकती है। इन सारी बातों की जानकारी मनोविज्ञान के अध्ययन से मिलती है।

④ दुर्घटनाएँ (Accidents):— औद्योगिक दुर्घटनाओं के क्षेत्र में भी मनोवैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उद्योग में मनोविज्ञान की परिवेश के पूर्व दुर्घटना को बिना कारण के घटने वाली संयोगवश घटना माना जाता था, लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया कि दुर्घटनाएँ कारणवश होती हैं और उन्हें दूर किया जा सकता है। दुर्घटनाएँ क्यों होती हैं, उसके दुष्परिणाम क्या होता है और दुर्घटनाओं को कैसे नियंत्रित किया जाता है। इन सारी बातों की जानकारी मनोविज्ञान के अध्ययन से मिलती है। यह जानकारी उद्योगपति तथा कर्मचारी दोनों के लिए वरदान सिद्ध हुई है।

(5) औद्योगिक तनाव [Industrial tension]:- औद्योगिक तनाव के क्षेत्र में भी मनोविज्ञान की उपयोगिता देखी जाती है। औद्योगिक तनाव क्यों होता है और इस तनाव को कैसे कम किया जा सकता है। इन बातों की जानकारी मनोविज्ञान के अध्ययन से होती है। अतः मनोवैज्ञानिक अनुकूल उपायों का सुझाव देते हैं जिनके आधार पर औद्योगिक तनाव या औद्योगिक संघर्ष [Industrial conflict] को नियंत्रित करके तालाबंदी, हड़ताल आदि घातक घटनाओं से उद्योगपति तथा कर्मचारी दोनों को सुरक्षित रखा जाता है।

(6) मनोवैज्ञानिक वातावरण [Psychological environment] मनोवैज्ञानिकों की भूमिका इस संदर्भ में भी महत्वपूर्ण है कि मनोवैज्ञानिक वातावरण को कैसे उन्नत बनाया जा सकता है। दूसरे शब्दों में उद्योगपति तथा कर्मचारियों के बीच संबंध को कैसे उन्नत बनाया जाय, इसकी जानकारी मनोविज्ञान की अध्ययन से मिलती है।

(7) भौतिक वातावरण [Physical environment]:- औद्योगिक संगठन का एक महत्वपूर्ण अंग भौतिक वातावरण कहलाता है। उद्योग के भवन, ताप, वायु का आवागमन, रोशनी कार्य अवधि, कार्य विस्ता आदि की गणना भौतिक वातावरण के अन्तर्गत की जाती है। इस भौतिक वातावरण को किस प्रकार उन्नत बनाया जाय इसकी जानकारी मनोविज्ञान के अध्ययन से ही संभव होती है। औद्योगिक जलवायु [Industrial climate] अथवा संगठन जलवायु [Organisation climate] को अनुकूल बनाने में मनोवैज्ञानिकों का योगदान सराहनीय है।

(8) उत्पादकता [Productivity]:- इस क्षेत्र में भी मनोवैज्ञानिकों की भूमिका महत्वपूर्ण है, उत्पादन के गुण तथा मात्रा को कैसे बढ़ाया जाय, इसके लिए मनोवैज्ञानिक अनुकूल उपायों का सुझाव देते हैं जिन पर उद्योगपति अमल करते हैं जिससे संतोषजनक उत्पादकता संभव होती है।

(9) मानव संबंध: [Human Relations]:- उद्योग या संगठन के क्षेत्र में मनोविज्ञान की एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानवता की पहचान है। औद्योगिक संगठन में मनोविज्ञान के प्रवेश के पहले अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया

Page No. ______
Date ______

जाता था। जिसका उद्देश्य औद्योगिक कार्य कुशलता को उन्नत बनाना था। लेकिन मनोवैज्ञानिकों ने उद्योग में मानवीय पक्ष पर बल दिया और प्रमाणित किया कि अधीनस्थ कर्मचारियों के साथ मानवता का व्यवहार करने से औद्योगिक कार्य क्षमता बढ़ती है। हॉथार्न अध्ययन (Hawthorne Studies) से इस बात की पुष्टि होती है।

अतः औद्योगिक संगठन में मनोवैज्ञानिकों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है और मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों एवं नियमों के उपयोग करके औद्योगिक लक्ष्य को प्राप्त करने में अधिक सुविधा होती है जो उपर्युक्त विवेचनों से स्पष्ट है।

Sinha
[redacted]

Prem Shankar Sinha